पाठ – जलाते चलो

(क) कविता में किसे जलाने और किसे बुझाने की बात कही गई है?
उत्तर – मनुष्य आशा रूपी दीपक जलाकर रखें। स्नेह से भरे दीपक चारों ओर जले और बिना स्नेह वाले विद्युत – दिये बुझा देने चाहिए क्योंकि बनावटी वस्तुएँ बाधा उत्पन्न करती हैं।

(ख) कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए किन वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं?

उत्तर – कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए अमावस, तूफ़ान, निशा, शिला आदि के उदाहरण दिए गए हैं।

(ग) "दिये और तूफ़ान की यह कहानी चली आ रही और चलती रहेगी" दीपक और तूफ़ान की यह कौंन – सी कहानी हो सकती है जो सदा से चली आ रही है?

उत्तर – दिये और तूफ़ान की कहानी से अभिप्राय-अमीर-गरीब, सत्य-असत्य, हिंसा – अहिंसा, पाप-पुण्य आदि अच्छाई और बुराई से है। अच्छाइयों और बुराइयों का टकराव होना स्वाभाविक है। इनके टकराव की कहानी युगों-युगों से चली आ रही है और आगे भी ऐसे ही चलती रहेगी।

(घ) दीपक की यह सोने जैसी लौ क्या हो सकती है जो अनगिनत सालों से जल रही है?

उत्तर – दीपक की यह सोने जैसी लौ आशा और उम्मीद का प्रतीक है। यह लौ अनगिनत सालों से जल रही है। हमारा जीवन अच्छे भविष्य की आशा का सहारा लेकर ही चलता है।